कसौटियों पर राजऋषि

संसार में यदि उच्चता को पाना है, तो कुछ असाधारण करके ही पाया जा सकता है। हम शास्त्रों में कई बार ये शब्द पढ़ते आये जिसका ताल्लुक हमारे वर्तमान जीवन से है। वो शब्द है, राजऋषि। राजऋषि शब्द दो अर्थ लिये हुए है। राज+ऋषि। तो ये दोनों, एक ओर राज माना भाग्य और ऋषि माना त्याग। और अधिक जानें तो ऋषि अर्थात् बेहद का वैराग्य। सर्व अधिकार भी और बेहद के वैरागी भी। जब ये जीवन में संतुलित रूप में रहता है, तब ही हम बाह्यता के प्रभाव से मुक्त और सबके प्रिय भी रह सकते हैं। तब ये दोनों ही लक्षण हमारे बोल और कर्म में सदा साथ साथ झलकेंगे।

वर्तमान में स्वराज्य अर्थात् स्व का इन कर्मेन्द्रियों पर राज्य। इसको कहते हैं स्वराज्य। और वह है भविष्य का डबल राज्य। स्व पर राज्य और विश्व का राज्य। वर्तमान में जितना राज्य का नशा, उतना ही बेहद का वैराग्य।

ऋषि और राज ये दोनों ही स्मृति में सदा बैलेन्स के रूप में रहता है, तब ही ब्लेसिंग के पात्र बनते हैं। पर होता क्या है, चलते चलते हम इसका संतुलन बनाये रखने में कहीं ऊपर नीचे हो जाते हैं। परिणामस्वरूप जो हमें ब्लेसिंग चाहिए, वह हमसे थोड़ी सी दूर हो जाती है।

- ब्र.कु. गंगाधर

सबसे बड़ी बात, ऋषि माना ही इस दुनिया से अलिप्त। माना जैसे कि दुनिया से स्वयं मर चुके हैं। ऐसा अनुभव हर घड़ी होता रहेगा। सारी आत्मायें जैसे कि मूर्छित नज़र आयेंगी। ये सब सिर्फ कहने मात्र तक तो नहीं होगा ना। ये सब मरे पड़े हैं जैसे कि कब्रिस्तान। जब तक ऐसा अनुभव नहीं होता, तब तक बेहद के वैरागी नहीं बन सकेंगे। आजकल दुनिया में भी हद के वैरागी जंगल में या शमशान में जाते हैं। इसलिए तो गायन है शमशानी वैराग्य। तो जब तक ये दुनिया शमशान है, ऐसा अनुभव नहीं होगा, तब तक सदा काल के बेहद का वैराग्य, ये अनुभव कैसे कर सकेंगे?

अगर हम ऐसे राजऋषि बनना चाहते हैं, तो अपने आपसे हर घड़ी पूछना होगा कि मैं ऋषि बना हूँ? ऐसे अपने आप से बातें कर अपने को निश्चयबुद्धि बनाना है। साथ ही साथ अधिकार की खुशी में रहेंगे तो राजऋषि बनने के लिए जितना ही राज्य का नशा, उतना ही बेहद के वैराग्य के नज़ारे, दोनों साथ साथ अनुभव होंगे।

यहां वर्तमान में जितना कब्रिस्तान अनुभव होगा, उतना ही परिस्तान सामने दिखाई देगा। त्याग के साथ साथ भाग्य भी स्पष्ट सामने दिखाई देगा। सम्पूर्ण राजऋषि स्थित अर्थात् नशा और निशाना(लक्ष्य) दोनों ही स्पष्ट होंगे। निशाना अर्थात् अपनी सम्पूर्ण स्टेज। ये सम्पूर्ण स्टेज रूहानी रूहाब में बिल्कुल सामने दिखाई देगी जैसे कि स्थूल नेत्रों के सामने दिखाई देती है। जब सामने दिखाई देती है, तो फिर संकल्प भी नहीं उठेगा कि यह वस्तु है कि नहीं है, क्या है व कैसी है। तब अपने आप में अनिश्चय नहीं होगा कि मैं बनूंगा या नहीं बनूंगा। ये प्रश्न ही समाप्त हो जायेंगे। अपनी सम्पूर्ण स्टेज की निशानियां स्वयं में स्पष्ट नज़र आयेंगी।

जो राजऋषि होंगे, उनकी निशानियां क्या होंगी, उसे हम छः कसौटियों पर देखें...

पहली निशानी, दुनिया के किसी भी व्यक्ति या वैभव से संकल्प मात्र व स्वप्न मात्र भी लगाव नहीं होगा। सदा स्वयं को कलियुगी दुनिया से किनारा करने वाले संगमयुगी समझेंगे।

दूसरी निशानी, सारी सृष्टि की कैसी भी आत्माओं को कल्याण और रहम की दृष्टि से देखेंगे।

तीसरी निशानी, सदा स्वयं को परमात्मा के समान सेवाधारी अनुभव करेंगे।

चौथी निशानी, विजय मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, ये रग रग में आलोकित होगा। जिसके कारण हर कर्म में निश्चय का प्रत्यक्ष स्वरूप, विजय सदा अनुभव करेंगे।

पाँचवी निशानी, वे तीनों लोकों के तख्तनशीन अनुभव करेंगे। त्रिकालदर्शीपन की स्मृतिस्वरूप होने के कारण कर्म के तीनों कालों को जानने वाले हर कर्म को श्रेष्ठ कर्म व सुकर्मी बनायेंगे। विकर्म का खाता जैसे कि समाप्त हुआ अनुभव होगा। हर कार्य, हर संकल्प सिद्ध हुआ ही पड़ा है, ऐसा सदा अनुभव करेंगे।

छठवीं निशानी, पुराने संस्कार और स्वभाव से उपराम अनुभव करेंगे। साथ ही सदा साक्षीपन की सीट पर स्वयं को सेट हुआ अनुभव करेंगे। यह हैं उपरोक्त निशानियां भी और निशाने अर्थात् लक्ष्य भी।

तो आप भी राजऋषि के टाइटल से अपने आप को आलोकित करना चाहते हैं ना! तो इसके लिए रोज़ दिन में कम से कम पाँच बार इस स्थिति का गहराई से अभ्यास करें। तब हर समय वो स्मृति आपकी परिपक्वता की ओर अग्रसर होती जायेगी और एक समय आयेगा कि वो आपकी नैचुरल नेचर बन जायेगी। तो अब दिवाली आ रही है, तो इस दिवाली पर अपने आत्मदीप की लौ को इस स्मृति में लवलीन बनाकर जलाये रखेंगे। इस तरह से अभ्यास करें कि हम जहां पहुंचना चाहते हैं, वो हमारे कर्म से, बोल से और संकल्प से झलकते रहना चाहिए। इसी झलक और फलक से अकल्याण, कल्याण में तबदील होगा। तो आइये हम सभी इस अभ्यास में जुट जायें और जिस प्रकार दिवाली में नये वस्त्र पहनते हैं, उसी तरह नये और मधुर संकल्पों के वस्त्र धारण कर दिवाली मनायें।

चारो सब्जेक्ट में फुल मार्क्स के लिए फॉरगिव एंड फॉरगेट

सब एक दो को देखके खुश हो गये, मैं आपको देख खुश, इनको देख खुश, हम भी खुश, ऐसे सब खुश हैं ना। सर्व गुण सम्पन्न बनना है तो खुश रहना है, चाहे कुछ भी हो जाए...। उसके लिए क्या भी है कोई बात नहीं, कैसी भी बात को सोचके बड़ा नहीं बनाना है। बड़ी बात छोटी हो जाए।

बाबा के कुछ शब्द ऐसे मीठे हैं, खींचने वाले हैं, जिसके सहारे हमारी जीवन यात्रा सफल हो रही है। हम सब यात्री हैं ना, जा रहे हैं अपने घर में। बाकी थोड़ा है, जम्प लगाके पहुंचना है। पुरानी दुनिया, पाँच तत्वों की दुनिया सारी सतोप्रधान बन रही है, हमको सतोगुणी बनना है। उसमें कभी कोई भूले नहीं, फॉरगिव एंड फॉरगेट। मेरे से कोई भूल हुई या और किसी से कुछ भूल हुई, भूल जाओ, सबसे सयाना, सच्चा और अच्छा बनना है तो भूलों को भूल जाओ, क्योंकि जो मिनट पूरा हुआ फिर कल्प बाद होगा। जो हुआ सो ड्रामा। यह फॉरगिव और फॉरगेट वाला चारो सब्जेक्ट में फुल मार्क्स ले सकता है। कभी याद नहीं करेगा कि कल इसने यह किया था... शान्ति से काम लो माना शक्ति आ गई। बोला, रिपीट किया, यह दो कान इसलिए नहीं हैं। तो यह दो कान भगवान की बात सुनने के लिए हैं, यह दो आँखें हैं बाबा को देखने के लिए। बाबा परमात्मा है। मेरी बहन है या भाई है पर है आत्मा। रूहानी दृष्टि बड़ी राहत देती है, ताकत देती है। और मैं यहाँ आपको सामने देखके खुश हूँ। बाबा ने शक्ति भवन में जो कुटिया दी है, वहाँ कोई कभी कभी दो मिनट के लिए भी बाजू में आके बैठते हैं तो उन्हें अपनेपन की फीलिंग आ जाती है। बाबा ने अपना तो बनाया, पर फीलिंग भी अपनेपन की हो। अभी सारी सभा को देखो कितना अपनापन लग रहा है, कितना अच्छा लग रहा है।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

जब दिल में खुशी होती है तो वाणी मीठी और मधुर हो जाती है। बाबा की मीठी वाणी ने ही तो सारे यज्ञ का काम किया है। जैसे बाबा मीठे मीठे शब्दों में सुनाता था, वही और वैसे ही हम सबने सुनाया है, तब तो इतने सेंटर खुले हैं। कभी भी किसी के लिए कोई कमी-कमज़ोरी हमारे मन, चित्त में न हो, यह सम्भालना है। अन्त मते सो गते का ख्याल है। तो फॉरगिव एंड फॉरगेट यह दो शब्द सभी याद रखना।

अभी यात्रा पूरी हो गई है, फिर कल्प के बाद ऐसे ही यहाँ बैठेंगे। सेम, कल्प-कल्प, कोई फर्क नहीं होगा। यह खेल है। बाबा ने यह जो कल्प कल्प की नॉलेज दी है, उससे अतीन्द्रिय सुख पाया है, जिससे कर्मेन्द्रियों की चंचलता खत्म यानि शांत हो गई है। इच्छा मात्रम अविद्या। मन में कोई ख्याल ही नहीं, क्या करूँ, कैसे करूँ। किसी बात की चिंता-फिकर भी नहीं। हर समय निश्चिंत हैं।

संगमयुगी जीवन का आधार-हिम्मत

मधुबन में सभी बाबा की मीठी-मीठी बातें सुनकर बाबा के प्यार में समा जाते हैं। यहाँ पढ़ाई की, अभी वहाँ जाकर पेपर देना। आप जहाँ भी जायेंगे वहाँ ही आपका प्रैक्टिकल पेपर होगा। पेपर देने में तो खुशी होती है, क्योंकि पेपर ही क्लास को आगे बढ़ाता है। लेकिन कोई पेपर देखकर थोड़ा कन्फ्यूज़ हो जाते हैं - यह क्यों? यह क्या? अभी तक पेपर आते रहेंगे? लेकिन बाबा ने फाइनल बता दिया है कि पेपर तो अंत तक आयेंगे और हम अंत में पास विद् ऑनर होंगे। फेल तो होंगे ही नहीं, क्योंकि हम बाबा के बच्चे बने हैं तो बाबा मदद करते हैं, हिम्मत से ही बाबा की मदद ले सकते हैं। सिर्फ हमको इसमें अटेंशन क्या देना है, पेपर कितना भी बड़ा हो लेकिन हिम्मत नहीं हारनी है। थोड़ा भी दिल में क्वेश्चन होता है तो हिम्मत कम हो जाती है। इसलिए बाबा कहते हैं हिम्मते बच्चे, मददे बाप। लेकिन कभी-कभी उल्टा कर देते हैं। कहते हैं - मदद बाप देवे तो हिम्मत आवे तो यह रॉन्ग हो जाता है।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

पहले है हिम्मते बच्चे, फिर है मददे बाप! तो हिम्मत ही वरदान व शक्तियाँ लेने का आधार है। इसलिए हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए, क्योंकि हिम्मत से ही बाबा की मदद मिलती है।

दूसरी बात, बाबा हमारे साथ कम्बाइन्ड हैं तो हम कमज़ोर हो नहीं सकते, क्योंकि साथी सर्वशक्तिमान है। जब सर्वशक्तिमान बाबा हमारे साथ हैं तो हम कमज़ोर भी हिम्मत वाले बन जाते हैं। लेकिन बाबा ने कहा, बच्चे बाबा के साथ बहुत खेल करते हैं। कोई बात आती है, कोई समस्या या कोई परिस्थिति आती है तो क्या करते हैं? मुँह फेर देते, इसलिए बाबा का साथ छूट जाता है।

लेकिन अगर यह एक बात भी याद रहे कि बाबा हमारे साथ हैं तो हमको क्या परवाह हैं! हम माया से क्यों डरें! जब सर्वशक्तिमान हमारे साथ है तो माया उसके आगे क्या है! हम कमज़ोर हैं तो सोचेंगे कि माया का रूप बड़ा है। लेकिन भल हम छोटे हैं, पर हमारा साथी बाबा तो बहुत बड़ा है। उसके आगे माया क्या है! चींटी! वह भी ज़िंदा नहीं मरी हुई। इसलिए बाबा कहते हैं कि हिम्मत नहीं हारो, हिम्मत हमेशा रखो। कुछ भी हो जाए लेकिन अपना पुरूषार्थ करते रहो और योग में रहो। हिम्मत कभी भी नहीं छोड़नी चाहिए। 60 साल के अनुभवों में हमने देखा है कि हिम्मत रखने से कई कार्य ऐसे हुए हैं जैसे असंभव से संभव, लेकिन पेपर आता ज़रूर है, सिर्फ हम घबरायें नहीं। हिम्मत का एक पाँव आप उठायें तो बाबा पदम कदम मदद करेगा। लेकिन उल्टा नहीं करना, बाबा मदद दे तो मैं कदम उठाऊं, नहीं, यह उल्टा है, पहले मेरी हिम्मत फिर बाबा की मदद तो क्या नहीं हो सकता है।

आखिर भी हम मा.सर्वशक्तिमान हैं, सिर्फ यह निश्चय अपने में होना चाहिये। बाबा में निश्चय तो है लेकिन बाबा के निश्चय के साथ-साथ अपने में भी निश्चय चाहिए, निश्चय को चारो तरफ से पक्का करो। एक बाबा में, दूसरा अपने में निश्चय, तीसरा ड्रामा में, चौथा ब्राह्मण परिवार में निश्चय, एक भी निश्चय ढ़ीला हो तो हलचल ज़रूर होगी, हिलने वाली चीज़ हिल हिल कर टूटेगी। हम ब्राह्मणों को सिर्फ बाबा से प्यार है। बाबा के बिना संसार नहीं, बाबा ही हमारा संसार है तो संसार के बिना कहाँ जायेंगे!

संसार में दो चीज़ें होती हैं - एक व्यक्ति माना आत्माएं और दूसरा वस्तु माना चीज़ें, तो हमारा सम्बंध भी बाबा से और जो प्राप्ति चाहिए, वह भी बाबा से, तो संसार ही बाबा हो गया और कोई है ही नहीं।

हमें सदा क्षीरखण्ड होकर ही रहना है

बाबा कहते बच्चे सदा आज्ञाकारी बनो। आज्ञाकारी अर्थात् हाँ जी, यही हमारा साइन है। जो यहाँ हाँ जी, हाँ जी करेंगे, उनकी वहाँ हाँ जी-हाँ जी होगी। हाँ जी करने वाले कभी डगमग नहीं हो सकते। क्यों, क्या, कैसे... इन प्रश्नों में वे अपना माथा गर्म नहीं करेंगे। उनका दिमाग शीतल कुण्ड होगा, क्योंकि हाँ जी का पाठ गर्मी निकाल देता है। शीतल काया वाले योगी बन जाते हैं।

मेरे दिल में सबके लिए रिस्पेक्ट हो। रिस्पेक्ट वही रख सकते जिनके अंदर शुभ भावना है। अगर अनुमान और नफ़रत होगी तो प्यार भी गंवायेंगे, मान भी गंवायेंगे। युनिटी भी नहीं रह सकेगी। भल तुम्हें गिराने लिए कोई ने गड्ढ़ा खोदा हो, लेकिन अगर तुम सच्चे हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा ज़रूर करेगा। तुम्हें बचा लेगा। अंदर में कभी भी अशुभ भाव न हो। ऐसे नहीं सोचो- देखना यह मेरे लिए ऐसा करता, धर्मराज बाबा इसे कितना दण्ड देंगे। मैं कोई श्राप देने वाला दुर्वासा नहीं हूँ। मैं क्यों कहूँ यह मुझे तंग करता- देखना इसकी क्या गति होगी! मैं क्यों बुरा सोचूं! अगर मैंने अशुभ सोचा तो मुझे उसका सौ गुणा दण्ड मिलेगा, क्योंकि मैं दुर्वासा बनी। राजयोगी दुर्वासा नहीं बन सकते। आप अपनी ऐसी स्थिति रखो तो कभी इन्द्रियों की चंचलता आयेगी ही नहीं। तुम बाबा को मनाओ तो आपेही सब मान जायेंगे। कई हैं जो भावना रखते सर्विस की और करते हैं डिससर्विस। आपस में नहीं बनती तो लड़ पड़ते। कहेंगे मुझे मान नहीं मिलता, उसे मिलता मुझे क्यों नहीं मिलता।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

हमें बाबा ने श्रीमत दी है- बच्चे क्षीरखण्ड होकर रहो। स्वप्न में भी लूनपानी (खारा पानी) नहीं होना। मैं क्षीरखण्ड वाली लूनपानी क्यों होती! अगर लूनपानी होते तो ब्रह्माकुमार कुमारी कहला नहीं सकते। मेरा काम है दूध-चीनी होकर रहना। अगर मेरे में नमक होगा तो दूसरे भी मेरे ऊपर नमक डालेंगे। लूनपानी होने का मुख्य कारण है देह-अभिमान। अगर मैं इस दुश्मन से किनारा कर क्षीरखण्ड रहूँ तो कोई भी बात मेरे सामने आयेगी ही नहीं। आयेगी तो हवा की तरह चली जायेगी। सदा क्षीरखण्ड रहो माना एकता में, युनिटी में रहो।

पढ़ाई छोड़ना माना लूला लंगड़ा बनना। मुरली में बाबा ने जो भी श्रीमत दी है, उसे पालन करने की कितनी शक्ति है? मेरा सारा व्यवहार श्रीमत के अंदर है? मुझे श्रीमत है - तुम देहधारी की आकर्षण में नहीं जाओ। अगर आकर्षण होती तो वह श्रीमत की लकीर छोड़ता। उन्हें रावण ज़रूर अपनी शोकवाटिका में ले जायेगा। हमें श्रीमत है तुम अपना तन-मन-धन बाबा की सेवा में लगाओ। अपनी दिनचर्या को श्रीमत के अनुसार चेक करो। ईर्ष्या के वश कभी भी किसी को गिराने का ख्याल नहीं करो। अगर स्वयं को चढ़ाने का संकल्प और दूसरे को गिराने का संकल्प है तो यह बहुत बड़ा पाप है।

भक्ति में कहते हैं हृदय में भगवान बैठा है। यह हृदय हमारे बाबा का घर है। जिनके हृदय में प्रेम है, उनके हृदय में बाबा की याद है। जिनके हृदय में बाबा है, उनके हृदय में बाबा के सब रत्न हैं। बाबा के सब फूल हैं। अगर कहते यह मेरा स्टूडेंट... बाबा कहता मेरा कहना भी बहुत बड़ा पाप है। सब बाबा के स्टूडेंट हैं। बाबा के कहने पर चल रहे हैं फिर तुम क्यों कहती- यह मेरा स्टूडेंट तुम्हारे सेंटर पर नहीं जा सकता। मैं तो कहती जो ऐसा सोचते वह बहुत बड़ा पाप करते हैं। चुम्बक हमारा बाबा है, चलाने वाला बाबा है। बाबा के सब प्यारे बच्चे हैं। बेहद की भावना रखो। हद में नहीं आओ। मैं और मेरेपन की हदें बहुत नुकसान करती हैं, अब इन हदों से बाहर निकलो। जैसे बाबा बेहद का है, ऐसे बेहद दिल वाले बनो।